दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VIII (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL8**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 04/09/18 08

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **FIVE** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ________ टिप्पणी (Remarks): ________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेज़ों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त-तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हो कहीं पार।

प्रस्तुत काव्यांश प्रसिद्ध छायावादी कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'' की कालजयी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से उद्धृत है।

इन पंक्तियों में 'राम' के शरीर का अद्‌भुत बिम्बात्मक चित्रण किया है।

व्याख्या :- रावण से समर के बाद सांयकाल में सानुसत्रा के दृश्य में भगवान राम के नवनीत चरण पृथ्वी पर हैं। उनके हाथों में एवं कमर पर धनुष बांधा हुआ है। राम की जटाएँ इतनी घनी एव लंबी है कि उनकी लटें बाहुओं पर, छाती पर आ चुकी है। ऐसा लगता है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे विशाल पर्वत पर अंधकार छा गया हो। उनके नेत्र ऐसे लग रहे हैं मानो दूर आकाश में तारे चमक रहे हों।

विशेष :- अंधकार के दृश्य में 'राम' के वदन चित्रण में अद्भुत बिम्बात्मकता परिलक्षित हुई है। बिम्ब रचना में आधुनिक युग में निराला का कोई सानी नहीं है।

(ii) 'उतरा ज्यों दुर्गम --' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(iii) खड़ी बोली के विकास का चरम रूप पंक्तियों में दिखाई पड़ता है।

(iv) दूधनाथ सिंह ने कहा है कि इन पंक्तियों में लगता है कि 'राम' के ~~स्वरूप~~ रूप में जैसे निराला स्वयं उपस्थित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पाई खुशबू, रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतराता है केपीटलिस्ट!
कितनों को तूने बनाया है गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-धाम।

उपर्युक्त पंक्तियाँ प्रगतिवाद के दौर में लिखी गई छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की अद्वितीय कविता 'कुकुरमुत्ता' से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में कुकुरमुत्ता द्वारा गुलाब को पूंजीवादी व्यवस्था का प्रतीक मानकर उसकी आभिजात्यता पर कटाक्ष किया है।

पंक्तियों में कुकुरमुत्ता गुलाब पर निशाना साधकर कठोर शब्दों में कहता है कि - सुन बे गुलाब! तुम्हारी खुशबू व रंग के कारण तुम में जो अहंकार है, वह खुशबू तुमने खाद का खून चूसकर अर्जित की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी वजह से तुम डाला पर बैठ कर ~~शक्ति वर्मा~~ शोषक वर्ग की भाँति (कैपिटलिस्ट) घमंड कर रहे हो। तुम्हारे इस सौन्दर्य में माली का भी बहुत बड़ा हाथ है अर्थात् उसकी मेहनत से ही तुम्हारा सौन्दर्य फला फूला है।

विशेष :- (i) हालावाद के साथ प्रगतिवादी मूल्यों पर चोट कर दोनों विचारधाराओं का अतिक्रमण निराला ने किया है।
(ii) भाषा शैली हालावाद की तरह कोमल व सुकुमार न होकर कर्कश व कठोर प्रतीत होती है।
(iii) पंक्तियों में शोषक वर्ग के चरित्र को उघाड़ा है।
(iv) सुमित्रानंदन पंत की भाँति आभिजात्यवादी सौन्दर्य दृष्टि पर चोट की गई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) ओ चिंता की पहली रेखा, अरी विश्व-वन की व्याली,
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण, प्रथम कंप-सी मतवाली!
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा!
हरी-भरी-सी दौड़-धूप, ओ जल-माया की चल-रेखा!

प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावाद (1918-1936) के शिखर कवि 'जयशंकर प्रसाद' के आधुनिक युग के एकमात्र भाव-प्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के 'चिन्ता सर्ग' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में महाप्रलय उपरांत चिंतित मनु ने चिंता को संबोधित करते हुए ये पंक्तियाँ कही हैं।

महाप्रलयोपरांत शिला की छाँह में बैठा मनु उदास है। वह कहता है कि हे चिंता! तुम विश्व वन में घूमने वाली जहरीली नागिन की भाँति हो। तुम ज्वालामुखी विस्फोट के उपरांत होने वाले प्रचण्ड कंपन के समान हो। तुम्हारे आ जाने से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(i) मनुष्य समस्त अभावों का अनुभव करता है और उसके ललाट पर दानवी रेखाएँ उभर आती हैं।
तुम्हारे आने पर ही मनुष्य व्याकुल होकर अन्यत्र भाग-दौड़ करना शुरू करता है।

विशेष :- (i) चिंता जैसे मनोभावों का मानवीकरण करना प्रसाद की प्रमुख विशेषता है।
(ii) 'विश्व वन की व्याली' में अनुप्रास की छटा देखने योग्य है।
(iii) भाषा तात्समिकता, लाक्षणिकता के गुण-युक्त होते हुए भी बोधगम्यता को धारण करती है
(iv) उपलक्षित बिंब का प्रयोग किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) सहसा वीणा झनझना उठी–
संगीतकार की आँखों में ठण्डी पिघली ज्वाला-सी झलक गयी–
रोमांच एक बिजली-सा सब के तन में दौड़ गया।
अवतरित हुआ संगीत
स्वयम्भू
जिस में सोता है अखण्ड
ब्रह्मा का मौन
अशेष प्रभामय।
डूब गये सब एक साथ।
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।

उपर्युक्त पंक्तियाँ 'नई कविता' के शिखर रचनाकार एवं प्रयोगवादियों के प्रणेता कवि 'अज्ञेय' की 1960 में रचित कविता 'असाध्य वीणा' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में वीणा में संगीत उत्पन्न होने एवं उसके सम्मोहनकारी प्रभाव का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :- प्रियंवद के आत्म-निवेदनात्मक प्रयासों के उपरांत वीणा में संगीत अवतरित हुआ। यह संगीत कलाकार के प्रयासों का परिणाम न

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

होकर महामौन की तथता है। अज्ञेय ने संगीत को स्वयंभू, एवं महामौन की संज्ञा दी है।

इस संगीत का प्रभाव इतना उत्कर्षमूलक है कि सभी लोग इसमें सम्मोहित होकर डूब गये हैं परन्तु सभी ~~पर~~ पर इसका प्रभाव उनके स्वभावानुरूप पड़ा है।

विशेष :- (i) ज़ेन बौद्ध मत (शून्यवाद एवं योगाचार्य विज्ञानवाद) का प्रभाव स्पष्ट नज़र आता है।

(ii) 'ठण्डी पिघली ज्वाला' में विरोधाभास अलंकार देखते ही बनता है।

(iii) संगीत को 'स्वयंभू' एवं 'ईश्वर की अभिव्यक्ति' के रूप में उजागर किया गया है।

(iv) 'शब्दों की तराश' मन मोह लेती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जाने दो वह कवि-कल्पित था,
मैंने तो भीषण जाड़ों में
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर,
महामेघ को झंझानिल से
गरज-गरज भिड़ते देखा है,
बादल को घिरते देखा है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक काल के प्रमुख प्रगतिवादी कवि 'बाबा नागार्जुन' की कविता 'बादल को घिरते देखा है' से ली गई हैं।

पंक्तियों में कवि ने सौन्दर्य की वस्तुनिष्ठ व्याख्या कर पारंपरिक आभिजात्य सौन्दर्यबोध एवं रूढ़ियों पर सवाल उठाये हैं।

नागार्जुन प्रकृति को वैज्ञानिक भाव से देखते हैं। उनके अनुसार सौन्दर्य आध्यात्मिक वस्तु नहीं है। यही बात उन्हें हिमालय के दर्शन करने पर महसूस होती है कि हिमालय के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सौन्दर्य को आभिजात्यवादी चश्में से देखकर उसे कालिदास, यक्ष, मेघदूत से जोड़ना हास्यास्पद है।

इसी बात को व्यंग्यात्मक रूप में कहते हैं कि उन्हें तो केवल पर्वतों से टकराते हुए भीषण बादल ही नजर आते, न कि महाकवि कालिदास या उनका कोई यक्ष।

विशेष :- (i) प्रकृति के सौन्दर्यबोध पर नागार्जुन से मार्क्सवादी औचित्यता का अतिक्रमण किया है।

(ii) भाषा तत्सम पुट लिये हुए भी लोकवादी तेवर धारण करती है

(iii) 'दृश्य बिंब' एवं 'श्रव्य बिंब' का प्रयोग जानदार है।

(iv) नागार्जुन गेंहू के साथ-साथ गुलाब के सौन्दर्य को भी जनमानस को उपलब्ध कराना चाहते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) बिरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।
राम बियोगी ना जिवै, जिवै त बीरा होई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत दोहा 'प. श्यामसुन्दर दास' द्वारा कबीर के वाणियों के संग्रह ग्रन्थ 'कबीर ग्रंथावली' के 'विरह को अंग' नामक खण्ड से लिया गया है।

प्रस्तुत दोहे में कबीर विरहोपरांत रामभक्त की करुण दशा का वर्णन कर रहे हैं।

कबीर कहते हैं कि जिस व्यक्ति में प्रभु के विरह का सर्प प्रवेश कर गया, उसे किसी भी प्रकार के झाड़-फूँक से हराया नहीं जा सकता है।

कबीर कहते हैं कि राम अर्थात् ईश्वर के वियोग में भक्त का जीना संभव नहीं है। अगर वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जीयेगा तो पागल हो जायेगा।

विशेष :- (i) विरह के भयंकर प्रभाव का वर्णन किया गया है।

(ii) 'विरह भुवंगम' – रूपक अलंकार

(iii) 'राम' के रूप में कबीर अपने निर्गुण निर्गुण ब्रह्म का सगुणीकरण कर देते हैं।

(iv) कबीर की भाषा लोक-तत्व को धारण करती है, आभिजात्यता के फेर में नहीं पड़ती है।

(v) प्रभु-मिलन की तड़प पंक्तियों में दिखाई पड़ती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) भई पुछार, लीन्ह बनवासू। बैरिनि सवति दीन्ह चिलवाँसू।
होइ खर बान बिरह तनु लागा। जौ पिउ आवै उड़हि तौ कागा।।
हारिल भई पंथ मैं सेवा। अब तहँ पठवौं कौन परेवा?।।
धौरी पंडुक कहु पिउ नाऊँ। जौं चित रोख न दूसर ठाऊँ।।
जाहि बया होइ पिउ कँठ लवा। करै मेराव साइ गौरवा।।
कोइल भई पुकारति रही। महरि पुकारै 'लेइ लेइ दही'।।
पेड़ तिलोरी औ जल हंसा। हिरदय पैठि बिरह कटनूंसा।।
जेहि पंखी के निअर होइ, कहै बिरहै के बात।
सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल के प्रेमाश्रयी काव्यधारा के प्रसिद्ध सूफी कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' के काव्य 'पद्मावत' से उद्धृत है।

'नागमती-वियोग' खण्ड से ली गई ये पंक्तियाँ नागमती की करुण दशा में प्रकृति के साथ उसके संवाद का वर्णन कर रही है।

व्याख्या - नागमती ने प्रिय की तलाश में वनवास कर लिया। वह वन में सभी से पूछती भटक रही है। जितने पक्षी उसने प्रिय को संदेश देने के लिये

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भेजे, वे सभी सौतन के प्रभाव के कारण वापिस नहीं आये। नागमती कहती है कि मैं अब हार गई हूँ। अब प्रिय को संदेश कौन भेजे। कब मेरे प्रिय आकर मेरे गले से लगकर मेरा विरह शांत करेंगे। मेरे विरह के ताप के कारण कोई पक्षी मेरे पास नहीं आता। वे सभी मेरे ताप के प्रभाव से जलकर गिर जाते हैं। अब वह कोयल की भाँति प्रिय को पुकार रही है।

विशेष :- (i) शुक्ल जी ने कहा है - 'नागमती का वियोग हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।'

(ii) अवधी की बेमेल व खालिस मिठास दर्शनीय है।

(iii) नागमती विरह में प्रकृति का भी अद्भुत समावेश जायसी ने किया है

(iv) विरह में मध्यकालीन नारी की असहायता निरवलंबता का चित्रण किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अँखियाँ हरि-दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसराची ये बतियाँ सुनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी।
अब इन जोग सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी।
सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता हैं सूखी।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' द्वारा संपादित ~~भक्तिमाल~~ ग्रन्थ 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत हैं। इस ग्रन्थ में महाकवि सूरदास के भ्रमरगीत के पद संकलित हैं।

इन पंक्तियों में गोपियाँ दुखी व तप्त होकर उद्धव से निर्गुण ब्रह्म का ज्ञान न देने की गुहार कर रही हैं।

व्याख्या :- गोपियां उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! हमारी आँखें तो श्रीकृष्ण के दर्शन चाहती हैं। ये नेत्र तुम्हारे ब्रह्म की रूखी बातों में रुचि कैसे लें? श्रीकृष्ण के आने की दिन-रात प्रतीक्षा करने पर भी इनमें दर्द नहीं हुआ किन्तु

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

तुम्हारे इन योग संदेशों ने इन्हें अत्यन्त पीड़ित किया है।

आप हमें केवल श्रीकृष्ण का बाल रूप में दूध पीते हुए का दर्शन करा दो। हमें योग संदेश देना वैसे ही व्यर्थ है जैसे सूखी नदी में नाव चलाना।

विशेष :- (i) 'बारत वह मुख --' स्मृति बिंब का प्रयोग दृष्टव्य है।

(ii) गोपियों के कथनों द्वारा सूर की वक्रता एवं वाग्वैदग्ध्यता का परिचय होता है।

(iii) ब्रज-भाषा की मिठास व कोमलता देखते ही बनती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दिन दिन दूनो देखि दारिद दुकाल दुख,
दुरित दुराज, सुख सुकृत सकोचु है।
माँगे पैंत पावत पचारि पातकी प्रचंड,
काल की करालता भले को होत पोचु है।
आपने तौ एक अवलंब अंब डिंभ ज्यों,
समर्थ सीतानाथ सब संकट-बिमोचु है।
'तुलसी' की साहसी सराहिये कृपालु, राम!
नाम के भरोसे परिनामु को निसोचु है।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ भक्तिकाल में राम भक्ति-काव्यधारा के शिखर पुरुष 'गोस्वामी तुलसीदास' की रचना 'कवितावली' के 'उत्तरकांड' से उद्धृत हैं।

इन पंक्तियों में समन्वयवादी कवि तुलसीदास ने कलियुग की व्यवस्था का वर्णन किया है।

तुलसीदास कहते हैं कि कलियुग (उनके युग की दशा) में दिन-ब-दिन दुःख दोगुना होता जा रहा है, दरिद्रता बढ़ती जा रही है। लोगों को सुकृत्य करने में संकोच हो रहा है। दुष्टों की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बद रही है एवं काल के प्रभाव से भले व्यक्ति की दुर्दशा हो रही है। तुलसी कहते हैं कि मैं तो अपनी शून्यावस्था से ही भगवान राम पर आश्रित हूँ। उनके राम ही उनके संकटों के हर्ता हैं। हे राम! आप मेरी सराहना कीजिए क्योंकि आपके नाम भरोसे ही मैं परिणामों को लेकर निश्चिंत हूँ।

विशेष (i) प्रथम दो पंक्तियों में 'अनुप्रास' की छटा निर्दर्शनीय है (द वर्ण, स' वर्ण)

(ii) 'दास्य भक्ति' की प्रस्तावना की गई है।

(iii) राम के प्रति तुलसी की अगाध श्रद्धा एवं भक्ति दिखाई पड़ती है।

(iv) कलियुग की भयंकरता बिम्बात्मक रूप से दिखाई देती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) चमक, तमक, हाँसी, ससक, मसक, झपट, लपटानि।
ए जिहिं रति, सो रति मुकति, और मुकति अति हानि।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी को अपना आदर्श मानने वाले आधुनिक कवि जगन्नाथ दास रत्नाकर' के 'बिहारी सतसई' के दोहों' के संकलन से ली गई है।

इन पंक्तियों ने बिहारी ने 'यौन-क्रीडा' को ही संसार की समस्त क्रियाओं के ऊपर वरीयता देकर मुक्तिदायिनी बताया है।

बिहारी कहते हैं कि नायक द्वारा नायिका के साथ भोग-विलास की क्रीडाओं अर्थात - अंगों की चमक, अंधेरा, हास- परिहास, सिसकना, मसकना और झपटकर लिपट जाना आदि रति की क्रियाएँ ही अन्ततः मुक्ति का मार्ग बतलाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

बिहारी कहते हैं कि अन्य कोई भी प्रकार की क्रिया करना व्यर्थ है क्योंकि वास्तविक मुक्ति तो रतिमूलक प्रेम द्वारा ही संभव है।

विशेष :- (i) एक दोहे में केवल अनुभावों एवं क्रियापदों द्वारा संपूर्ण कथ्य कह देना बिहारी की ज़बरदस्त 'समाहार क्षमता' का परिचायक है।

(ii) ब्रज भाषा की तन्मयता, कोमलता के साथ अर्थ की झंकार देने में एवं 'शब्दों की तराश' में बिहारी का कोई सानी नहीं है।

(iii) बिंब क्षमता (दृश्य, स्पर्श) उल्लेखनीय एवं अद्वितीय है।

(iv) स्थूल भोगवादी मानसिकता का परिचय कवि ने दिया है।

(v) अनुप्रास एवं यमक अलंकारों का प्रयोग है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) उत्थान के पीछे पतन सम्भव सदा है सर्वथा,
प्रौढ़त्व के पीछे स्वयं वृद्धत्व होता है यथा।
हाँ! किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति-सी बड़ी,
जैसी बढ़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या पड़ी!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ द्विवेदीयुगीन प्रमुख कवि राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त' की उद्बोधनमूलक कविता 'भारत-भारती' के 'अतीत खण्ड' से उद्धृत हैं।

कवि ने भारत के अतीत के स्वर्णिम क्षणों एवं वर्तमान के पतन का अंकन पंक्तियों में किया है।

गुप्त जी कहते हैं कि उत्थान-पतन दोनों अवश्यंभावी धरनाएँ हैं जैसे युवावस्था के बाद वृद्धावस्था आना लाज़मी है। परन्तु जितनी मात्रा में हमने उन्नति के शिखर छूए उतनी ही तीव्र गति से हमारा पतन भी हुआ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है। ~~अर्थात~~ जिस प्रकार पूर्णिमा में अत्यधिक चमक विद्यमान होती है, उतनी ही मात्रा में अमावस्या में अंधेरा होता है; ठीक वैसा ही स्थिति अतीत एवं वर्तमान के भारत की है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष: (i) भारत की दुर्दशा पर कवि ने अत्यन्त मार्मिक वर्णन किया है।

(ii) भाषा 'प्रसाद-गुण' से युक्त है।

(iii) भाषा इतिवृत्तात्मकता, गद्यात्मकता के गुण के धारण करती है।

(iv) भारत की दुर्दशा के कारणों का विवेचन गुप्त जी ने किया है।

(v) भाषा तत्सम होने के साथ, लयात्मकता के गुण के धारण करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा
मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघवन बीच गुलाबी रंग।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसिद्ध हाला वादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' के भाव-प्रधान महाकाव्य 'कामायनी' के 'श्रद्धा-सर्ग' से ली गई हैं।

पंक्तियों में प्रसाद ने श्रद्धा की सुंदरता का सूक्ष्म वर्णन अत्यन्त तन्मयता के साथ किया है।

प्रसाद कहते हैं कि श्रद्धा के नीले वस्त्रों के ~~मध्य~~ मध्य कोमल खुले अंग दिखलाई पड़ रहे हैं। ये अंग मनु को ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानो काले घने बादलों के मध्य बिजली का गुलाबी रंग का फूल खिल आया हो। इस प्रकार श्रद्धा के पारदर्शी वस्त्रों में भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूक्ष्म सौन्दर्य का वर्णन प्रसाद ने किया है।

विशेष :- (i) प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रसाद को 'निवृत्ति मार्ग' के बजाय 'प्रवृत्ति मार्ग' के समर्थक होने की ओर इशारा कर रही हैं।

(ii) 'खिला हो ज्यों --' उत्प्रेक्षा की छटा अद्भुत है।

(iii) भाषा तत्सम, कोमल, सुकुमार एवं तन्मय है।

(iv) छायावादी कवियों की शैली प्रसाद ने माँसल सौन्दर्य का वर्णन न कर सौन्दर्य के सूक्ष्म व गूढ़ पक्षों को उभारा है।

(v) बिंबात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) यह निवृत्ति है ग्लानि, पलायन
का यह कुत्सित क्रम है,
निःश्रेयस यह श्रमित, पराजित,
विजित बुद्धि का भ्रम है।
इसे दीखती मुक्ति रोर से,
श्रवण मूँद लेने में,
और दहन से परित्राण-पथ
पीठ फेर देने में।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत काव्यांश आधुनिक युग के 'राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा' के शिखर पुरुष ओज-गुण युक्त राष्ट्रकवि 'रामधारी सिंह दिनकर' की लंबी कविता 'कुरुक्षेत्र' से उद्धृत है।

इस काव्यांश में दिनकर ने निवृत्तिमार्ग की आलोचना कर महाप्राणत्व धारण कर कर्म-मार्ग के समर्थन में तर्क दिये हैं।

दिनकर के काव्य में भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं कि संसार से मुंह मोड़ लेना पलायन है, ग्लानि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है, ~~कुकुमा~~ कुकर्मों के समान है। पराजित एवं हतोत्साहित व्यक्ति ही वैराग्य के भ्रम में जीते हैं, उन्हें केवल शोर मचाकर, आँख बंद कर श्रवण करने से ही मुक्ति पाने का आभास होता है किन्तु वास्तविक मुक्ति पीठ ठोककर बाधाओं का सामना कर कर्म-पथ पर अग्रसर होने में है।

विशेष :- (i) दिनकर पर मानववाद, मार्क्सवाद एवं कर्मवाद का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

(ii) भाषा तत्सम ~~शब्दों~~ शब्दावली युक्त एवं ओजगुण को धारण करती है।

(iii) लय का नैरन्तर्य बना हुआ है।

(iv) एक अन्य अर्थ में कविता में दिनकर ने गांधीजी के अहिंसा मार्ग को चुनौती दी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ...ये गरजती, गूँजती, आंदोलिता
गहराइयों से उठ रहीं ध्वनियाँ, अतः
उद्भ्रांत शब्दों के नए आवर्त में
हर शब्द निज प्रति-शब्द को भी काटता,
वह रूप अपने बिंब से ही जूझ
विकृताकार-कृति
है बन रहा
ध्वनि लड़ रही अपनी प्रतिध्वनि से यहाँ।

प्रस्तुत काव्यांश आधुनिक काल में नई कविता आंदोलन के समाजवादी आधुनिकतावादी पक्ष के झंडाबरदार 'मुक्तिबोध' की विश्लेषणात्मक लंबी कविता 'ब्रह्मराक्षस' से ली गई है।

इन पंक्तियों ने ब्रह्मराक्षस की स्थिति का बिंबात्मक वर्णन किया गया है।
कवि के अनुसार ब्रह्मराक्षस का स्थान निर्जन है। वह इतना ज्ञानी है कि संसार के हर ज्ञान की व्याख्या करता है। बावड़ी में उसके ये शब्द गूंज रहे हैं हर विचारधारा का ज्ञानी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होने के कारण हर व्याख्या की काट भी वह स्वयं ही करता है। इस प्रकार स्वयं अपने शब्दों का प्रतिरोध कर हर ध्वनि प्रतिध्वनि के रूप को धारण कर लेती है।

विशेष (i) उपलक्षित बिंब का प्रयोग द्रष्टव्य है। निर्मला जैन ने कहा भी है- "दिन के उजाले के चितेरे तो बहुत से कवि हुए हैं, किन्तु रात के अंधेरे से लड़ने की ताकत निराला व मुक्तिबोध जैसे गिने-चुने कवि ही कर पाये हैं।"

(ii) ब्रह्मराक्षस अत्यन्त ज्ञानी होने पर भी समाज से कटे होने व ज्ञान का उपयोग न कर पाने के कारण ब्रह्मराक्षस बनने को मजबूर है।

(iii) भाषा अनगढ़ व खुरदरी होने पर भी अर्थवत्ता में जानदार है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपर्युक्त पंक्तियाँ प्रसिद्ध आधुनिक प्रगतिवादी कवि 'नागार्जुन' की 1939 ई. की लघु कविता 'अकाल और उसके बाद' से ली गई हैं।

पंक्तियों में नागार्जुन ने अकाल की दशा में पशु-पक्षियों आदि की मार्मिक दशा का वर्णन किया है।

कवि कहते हैं कि अकाल के कारण चूल्हे भी रोना लगे हैं, चक्की बंद पड़ी रहने के कारण उदास दिख रही है। अकाल की दशा में समस्त चराचर प्रकृति की हालात अत्यन्त व्यथित हो चुकी है। चाहे वह कानी कुतिया हो, चाहे छिपकलियाँ हो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

या फिर भूखे हों।

विशेष :- (i) नागार्जुन ने अकाल के समय प्रभावित होने वाले समस्त चराचर तत्वों को शामिल कर लिया है। चूल्हा व चक्की का आना नागार्जुन का केवल सजीवों तक की प्रकृति का अतिक्रमण करता है।

(ii) 'चक्की की उदासी' जैसे प्रसिद्ध अवधी मुहावरों का प्रयोग।

(iii) 'कानी-कुतिया' प्रसंग में विकलांगों के प्रति संवेदना भाव प्रकट हुआ है।

(iv) शुक्ल जी ने भी कविता को समस्त प्रकृति के तत्वों तक विस्तृत करने को कहा है।

(v) लयात्मक सौन्दर्य व 'कई दिनों तक' की पुनरावृत्ति सौन्दर्य में वृद्धि करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 5$

(क) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें!! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी उपन्यासों की आंचलिक धारा के प्रवर्तक 'फणीश्वरनाथ रेणु' के प्रथम और सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' से ली गई है।

इन पंक्तियों में रेणु ने किसानों का खेत, प्रकृति, पशु-पक्षियों के साथ भावनात्मक व रागात्मक संबंध को व्यक्त किया है। यही संबंध शहरी डॉक्टर प्रशान्त भी महसूस करता है।

रेणु कहते हैं कि धरती पर विद्यमान धन-धान्य खेतों की हरी फसलें किसानों को पुलकित करती है। गाँव के लोगों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सभी संबंध एवं कृत्य इस प्रकृति के आवरण से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं वे सभी स्वयं को इस वातावरण का हिस्सा मानते हैं।

चूंकि प्रशान्त शहर से आया है अतः उसे प्रारंभ में प्रकृति, पशु-पक्षियों से जुड़ाव महसूस नहीं होता जैसा खेत में काम करते एक मजदूर को होता है।

विश्लेषण :- (i) ग्रामीण समाज के प्रकृति के साथ संबंध का वर्णन मोहन राकेश ने भी अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में कालिदास के माध्यम से किया है।

(ii) धरती को माता कहना - ग्रामीण प्रकृति संबंधों को दर्शाता है।

(iii) 'दूक', 'चैती' जैसे ग्रामीण शब्दों का प्रयोग।

(iv) रेणु की भाषा बिंबात्मक प्रभाव पैदा करती है मानो पाठक अंचल का हिस्सा हो गया हो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) महाराज, शास्त्रों में तो आत्मा-परमात्मा के ही मन्तर लिखे हुए रहते हैं न? आपके चरणों का सेवक ठहरा, दो-चार मन्तर मेरे अपवित्तर कानों में भी पड़ जायें, तो मेरी आत्मा का मैल भी छँट जाये। क्या करूँ, गुसाईं! घास खाने वाले पशु बैल नहीं हुए, अनाज खाने वाला पशु किसनाराम ही हो गया..... महाराज, मरने के बाद आत्मा कहीं परलोक को चली जाती है या इसी लोक में भटकती रह जाती है?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश 'राजेन्द्र यादव' द्वारा संपादित नई कहानियों के संकलन 'एक दुनिया समानान्तर' की कहानी 'प्रेत-मुक्ति' से ली गई है। इसके रचनाकार 'शैलेश मटियानी' है।

प्रस्तुत गद्यांश में निम्न वर्ण का व्यक्ति 'किसनराम' पंडित केवलानंद पांडे से मरकर प्रेत बन जाने का भय व्यक्त कर रहा है।

किसनराम कहता है कि शास्त्रों के मंत्रों को सुनने से आत्मा मुक्त होकर परलोक में चली जाती है, किन्तु निम्न वर्ण का होने के कारण वह इन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सभी मंत्रों को सुनने में असमर्थ है। उसके मन में अपनी मुक्ति को लेकर हमेशा संशय विद्यमान रहता है कि पत्नीविहीन एवं पुत्रविहीन होने के कारण उसे प्रेतयोनि में भटकना पड़ेगा।

विशेष :- (i) निम्न वर्गों का मनोविज्ञान किस प्रकार वर्णव्यवस्था ने नियंत्रण में कर लिया है, उसका चरम रूप इन पंक्तियों में दिखाई देता है।

(ii) 'एक दुनिया समानान्तर' संकलन की शहरी जीवन की कहानियों का अतिक्रमण कर यह कहानी ग्रामीण जीवन में वर्णव्यवस्था की विसंगतियों को उघाड़ती है।

(iii) प्रेमचन्द की कहानी 'सद्गति' में भी दुखी के मन में हीनता ग्रन्थि है, हालांकि दोनों कहानियों का मिज़ाज अलग है।

(iv) भाषा तद्भव व ग्रामीण तेवर युक्त है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अन्न पर स्वत्व है भूखों का और धन पर स्वत्व है देशवासियों का। प्रकृति ने उन्हें हमारे लिये–हम भूखों के लिये–रख छोड़ा है। वह थाती है, उसे लौटाने में इतनी कुटिलता! विलास के लिये उनके पास पुष्कल धन है और दरिद्रों के लिये नहीं?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी नाटकों के सशक्त हस्ताक्षर 'जयशंकर प्रसाद' के राष्ट्रीय भावना युक्त नाटक 'स्कंदगुप्त' से अवतरित है।

इन पंक्तियों में पर्णदत्त असमानता एवं अमीर-शासक वर्ग द्वारा गरीबों के शोषण पर विरोध व्यक्त करता है।

पर्णदत्त कहता है कि पृथ्वी के सारे संसाधन- अन्न, धन पर स्वामित्व धनी वर्ग का नहीं है बल्कि भूखों, गरीबों एवं दरिद्रों का है। प्रकृति के संसाधन धनी वर्गों के पास गरीबों की अमानत के रूप में रखे हुए हैं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु धनी वर्ग इन्हें गरीबों में वितरित न कर अपने भोग-विलास हेतु खर्च कर रहा है।

विशेष:- (i) मार्क्सवाद में निहित वितरणमूलक अन्याय की ही प्रतिध्वनि इन पंक्तियों में दिखाई पड़ती है।

(ii) गांधी के 'ट्रस्टीशिप सिद्धान्त' का दर्शन 'थाती' जैसे शब्दों के कारण आभासित होता है।

(iii) भाषा तत्समता, काव्यात्मकता को धारण करती है।

(iv) 'प्रश्नवाचक शैली' का प्रयोग किया गया है।

(v) वाक्य विधान सहज है एवं छोटे वाक्य अर्थबद्धि कर रहे हैं।

प्रासंगिकता:- वर्तमान में भी ऑक्सफैम सर्वे भी भारत की भयंकर विषमता को उजागर करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश नया नाटक युग एवं स्वातंत्र्योत्तर भारत में हिन्दी नाटक के शिखर पुरुष 'मोहन राकेश' के प्रथम नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में प्रियंगुमंजरी मल्लिका को राजनीति का महत्व बताती है।

प्रियंगु कहती है कि कालिदास अपनी साहित्य रचना एवं अतीत की स्मृतियों के कारण राज-काज एवं नीतियों में ध्यान नहीं लगाते हैं। राजनीतिक जीवन में हर क्षण अत्यन्त आवश्यक होता है। बिना ध्यान के निर्णय लेने में हुई देरी से एक भी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अत्यंत प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। इसीलिए राजनीति में व्यक्ति का जागरूक रहना सबसे बड़ी शर्त है।

विशेष :- (i) राकेश की भाषा 'जानने की' नहीं 'जीने की' भाषा है। प्राचीन काल -खंड होने पर भी भाषा सहजता से समझ आ जाती है।

(ii) प्रियंगु इन पंक्तियों द्वारा मल्लिका में यह भी संदेश दे रही है कि तुम कालिदास से ध्यान हटा लो।

(iii) प्रासंगिकता :- वर्तमान समय में भी 'गठबंधन की राजनीति' में ये पंक्तियाँ अत्यन्त प्रासंगिक हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश 'निबंध-निलय' निबंध संकलन में निहित 'आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी' जी के ललित निबंध 'कुटज' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में द्विवेदी जी कुटज की जिजीविषा एवं दृढ़ता को आधार बनाकर संपूर्ण मानव जाति को संदेश दे रहे हैं।

द्विवेदी जी कहते हैं कि एक छोटा सा दिखने वाला कुटज जिस प्रकार कठोर पत्थरों को तोड़कर, पाताल में जड़ जमाकर अपना भोजन संग्रह करता है। वही जिजीविषा, सामर्थ्य, दृढ़ता मनुष्य को भी अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये भी चाहिये। मनुष्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को कर्मशील रहकर विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी विकास-पथ पर अग्रसर रहना चाहिये। तभी मानव जाति का कल्याण संभव है।

विशेष (i) ललित निबंध के सभी उपादान इस निबंध में आ गये हैं- वैयक्तिकता, लालित्य, आत्माभिव्यंजकता, सहृदयता आदि।

(ii) 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है' - द्विवेदी जी की साहित्य दृष्टि को यह निबंध पूर्णतः स्थापित करता है।

(iii) भाषा तत्सम होते हुए भी अत्यन्त सहज व बोधगम्य बन पड़ी है।

(iv) प्रश्नवाचक शैली ने संवादों को जन्म दिया है।

(v) विराम चिह्नों का कुशल प्रयोग अर्थवृद्धि करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का परिचय दीजिये: $10 \times 5 = 5$

(क) जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिये मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। इस साधना को हम भावयोग कहते हैं और कर्मयोग एवं ज्ञानयोग के समकक्ष मानते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत निबंधांश हिन्दी निबंध परंपरा के सर्वोच्च हस्ताक्षर 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के संकलन 'चिंतामणि' के प्रमुख काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में शुक्ल जी कविता को ज्ञानयोग व कर्मयोग के समक्ष स्थापित करते हैं।

शुक्ल जी कहते हैं कि ज्ञान प्राप्त होने पर जिस प्रकार आत्मा को मुक्ति मिल जाती है, उसी प्रकार कविता द्वारा ही मनुष्य के हृदय को सांसारिक भेदों से ऊपर उठाकर रस-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संपृक्त करना रसदशा का परिचायक है। हृदय की मुक्ति हेतु मनुष्य जिन शब्दों की रचना करता है, वही कविता है। इस प्रकार कविता से उत्पन्न भावयोग, ज्ञान-योग एवं कर्मयोग के समकक्ष है।

विशेष :- (i) एक ही पैरा में संपूर्ण काव्यदर्शन स्थापित करना शुक्ल जी की समास शैली का परिचायक है।

(ii) कविता का महत्व ज्ञान एवं कर्म के समक्ष स्थापित किया गया है।

(iii) पंक्तियों में वैज्ञानिक शैली में 'विचारों की गूढ़ गुंफित परंपरा' दिखाई पड़ती है। विचार पैरा में दबा-दबाकर ठूँस गये हैं।

(iv) वैज्ञानिकता होने पर भी प्रसाद गुण एवं बोधगम्यता कम नहीं हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक नवजागरण-कालीन प्रमुख छायावादी नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' के नाटक 'स्कंदगुप्त' से उद्धृत है।

पंक्तियों में देवसेना द्वारा स्कंदगुप्त के लिये रोमैंटिक प्रेम व्यक्त हुआ है जो भौतिक प्रमिलन से ऊपर उठकर आध्यात्मिक स्तर पर विद्यमान है।

देवसेना कहती है कि स्कंद और उसका प्रेम राष्ट्रीय हित में न्यौछावर करना ही उपयुक्त होगा। वह प्रेम में होने वाले कष्टों को भी काम्य मानती है।

वह प्रेम को ऐहलौकिक न मानकर उसे आध्यात्मिकता से संयुक्त कर जन्म-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जन्मांतर तक विस्तृत कर देती है।
प्रेरित 'इस जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राण' इसी भावबोध से प्रेरित है।

विशेष (i) प्रसाद की नारियों में जो त्यागभावना, रोमांटिकता पाई जाती है- देवसेना उनमें सर्वोच्च महत्व रखती है।

(ii) प्रसाद के प्रत्यभिज्ञा दर्शन या आनंदवाद का प्रभाव दिखता है जो आनंद को समस्त सुख-दुखों के ऊपर मानता है।

(iii) छोटे चुस्त वाक्यों, उचित विराम-चिह्न योजना ने अर्थ-संप्रेषण में गुणात्मक वृद्धि की है।

(iv) डॉ० नगेन्द्र ने देवसेना को प्रसाद की सबसे सुंदर कल्पना बताया है।

(v) भाषा तत्सम प्रधान व काव्यात्मक है।

(vi) सूत्र वाक्य- 'कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

प्रस्तुत नाट्यांश आधुनिक काल में भारतेंदु युग के प्रणेता नाटककार 'भारतेंदु हरिश्चन्द्र' के नवजागरणवादी नाटक 'भारत-दुर्दशा' से उद्धृत है।

नाटक के चौथे भाग में 'अंधकार' द्वारा अपने परिचय में किये गये आलाप का वर्णन करती ये पंक्तियाँ अंधकार की भयानकता को दर्शाती है।

अंधकार भारत-दुर्दैव के सामने अपनी विशेषताओं का बखान करते हुए कहता है कि वह तमोगुण से उत्पन्न हुआ है। चोर, उलूक आदि मेरे कारण ही अपने आपराधिक कृत्य कर पाते हैं क्योंकि अंधेरा ही उन्हें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सहायता प्रदान करता है अंधकार के अनुसार हमारे आगमन से मनुष्य की बुद्धि, हृदय सब बेकाम हो जाते हैं। अंधकार आध्यात्मिकता का जन्म भी उसी से बताता है और अधिभौतिकता का भी।

विशेष :- (i) मनोभावों, स्थितियों आदि को मानव रूप प्रदान करना नाटक की प्रमुख विशेषता है।

(ii) अंधकार के माध्यम से भारतेन्दु ने आध्यात्मिकता एवं कर्महीनता पर चोट की है।

(iii) नवजागरण की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ रही है।

(iv) संक्रमणकालीन युग होते हुए भी खड़ी बोली सहज एवं सुबोध है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) जब हम अपने-आपको उन तमाम लोगों से बेहतर और ऊँचा समझते थे जो पिटी-पिटाई लकीरों पर चलते हुए अपनी सारी ज़िन्दगी एक बदनुमा और रिवायती घरौंदे की तामीर में बरबाद कर देते हैं, जिनके दिमाग हमेशा उस घरौंदे की चहारदीवारी में कैद रहते हैं जिनके दिल सिर्फ़ अपने बच्चों की किलकारियों पर ही झूमते हैं, जिनकी बेवकूफ बीवियाँ दिन-रात उन्हें तिगनी का नाच नचाती हैं और जिन्हें अपनी सफ़ेदपोशी के अलावा और किसी बात का कोई गम नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'राजेन्द्र यादव' द्वारा संपादित नई कहानियों के संकलन 'एक दुनिया समानान्तर' में निहित 'कृष्ण बलदेव वैद' की कहानी 'मेरा दुश्मन' से ली गई हैं।

कहानी का नायक 'मैं', अपने अन्तर्मन में निहित उसके 'इड' 'वह' के बारे में सोचता हुए अपनी पुरानी जिन्दगी एवं वर्तमान जिन्दगी की तुलना इन पंक्तियों में करता है।

नायक 'मैं', सोचता है कि अपने यौवन के दिनों में वह एवं उसके मित्र स्वच्छंद जीवन व्यतीत करते थे। उन्हें परतंत्र रहना मंजूर नहीं था। वे तो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उन व्यक्तियों का उपहास उड़ाया करते थे जो अपनी पत्नियों का कहा मानते हैं या उनके इशारों पर नाचते थे। उन्हें सब औपचारिकताएँ बेतुकी लगती थी। परन्तु आज वह उसी प्रकार की ही जिन्दगी जी रहा है

विशेष (i) मुक्तिबोध की तरह ~~हालांकि~~ अन्तर्मन का संघर्ष चित्रित हुआ है हालांकि उसके तेवर अलग है। यहाँ 'इड' व 'ईगो' का संघर्ष है

(ii) भाषा में सफ़ेदपोशी, चहारदीवारी जैसे फ़ारसी, अरबी शब्द अर्थ को जानदार बनाते हैं

(iii) 'तिगनी का नाच नचाना' जैसे मुहावरों का प्रयोग

(iv) फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद एवं अस्तित्ववादी दर्शन का प्रभाव नज़र आता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी; और किसानों के मुकाबले में वे लोग, जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे; वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी कहानियों के शहंशाह 'प्रेमचन्द' की चरम यथार्थवाद युक्त अंतिम कहानी 'कफन' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में प्रेमचन्द ने 'घीसू व माधव' के अकर्मण्य स्वभाव के पीछे के कारणों का विश्लेषण किया है।

प्रेमचन्द कहते हैं कि घीसू व माधव जन्मजात कामचोर नहीं है, बल्कि परिस्थितियों ने उन्हें ऐसा बना दिया है। क्योंकि काम करने वाले भी अपनी आय को गवाँ बैठकर निर्धन ही बने रहते हैं जबकि सारा ~~साया~~ लाभ तो शोषक, अमीर, धनी वर्ग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उठा ले जाता है। ऐसी परिस्थिति में 'काम करना' या 'न करना' एक समान है।

विशेष :- (i) विश्लेषण की बहुलता ने कहानी का विश्लेषण प्रधान एवं स्थितियों के प्रभाव ने स्थितिप्रधान बना दिया है।

(ii) 'नई कहानी' की सर्व पीठिका इस कहानी में दिखाई पड़ती है।

(iii) यथार्थ का चरम नंगा रूप प्रकट हुआ है।

(iv) विराम चिह्नों का उचित प्रयोग

(v) हिन्दुस्तानी भाषा शैली

(vi) वाक्य विधान चुस्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation